IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन"

[1] नीतू साहू, [2] डॉ. निशा श्रीवास्तव, [3] डॉ. पुष्पलता शर्मा
[1]शोधार्थी (शिक्षा, [2]प्राध्यापक (शिक्षा विभाग, [3]प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
[1] हे. या. वि. वि. दुर्ग
[2]घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, आर्य नगर, दुर्ग
[3]कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, दुर्ग

सारांश – प्रस्तुत शोध में किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के ग्यारहवीं कक्षा के 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. सुभाष सरकार एवं श्री प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित इन्टरनेट एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्युड स्केल तथा डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. आरती आनंद द्वारा निर्मित एजुकेशनल एंग्जॉयटी इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 2X2X2 त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की संगणना की गयी। शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष यह बताते हैं कि किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है किन्तु विद्यालय प्रकार के आधार पर अध्ययन के द्वारा यह पाया गया कि अशासकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों में शासकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता पाई जाती है। यह भी पाया गया कि किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

1. **प्रस्तावना** – चिंता न केवल मस्तिष्क को चोट पहुंचाती है अपितु शरीर पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान में विद्यार्थियों को अनेक तकनीकी सुविधाओं की भी आवश्यकता होती है जिनमें स्मार्ट फ़ोन एवं कंप्यूटर का विशेष स्थान है। आज लगभग प्रत्येक विद्यार्थी इन्टरनेट और सोशल मीडिया से परिचित है जिसका प्रभाव उनके जीवन तथा शिक्षा पर दिखाई देता है। किशोरावस्था में बालक बालिकाओं को अनेक परिवर्तनों से तथा जिम्मेदारियों से गुजरना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप किशोरों में तनाव, चिंता एवं अवसाद की स्थिति का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। जिसके समाधान हेतु सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों के व्यावहारिक जीवन एवं शिक्षा पर परिलक्षित होता है। प्रस्तुत शोध में किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

2. **समस्या** – वर्तमान में विद्यार्थियों की शिक्षा को लेकर कई चुनौतियां हैं जिनके कारण शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएं भी उत्पन्न होती है। इन्हीं समस्याओं में से एक समस्या किशोरों की शैक्षिक चिंता भी है। आज सोशल मीडिया के बढ़ते प्रयोग ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित किया है। आज की युवा पीढ़ी कई एप्स तथा साइट्स का उपयोग करते हुए सोशल मीडिया की जड़ों में फंसते जा रहे हैं जिससे भावी पीढ़ी में शैक्षिक चिंता की स्थिति का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है। इसी कारण प्रस्तुत शोध में इस समस्या का चयन किया गया है –

"किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन"

3. **अध्ययन का उद्देश्य –**

किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार के मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

4. **अध्ययन की परिसीमा –**

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएं हैं –

- प्रस्तुत अध्ययन को छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिला तक सीमित किया गया है जिसमें दुर्ग एवं पाटन विकासखंड को लिया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 11 वीं कक्षा के किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण कार्य हेतु दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन हेतु शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 300 तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 300 (कुल 600) विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सुभाष सरकार एवं प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित **"इन्टरनेट एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्युड स्केल"** तथा शैक्षिक चिंता का मापन करने के लिए डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. आरती आनंद द्वारा निर्मित **"एजुकेशनल एंग्जॉयटी इन्वेंटरी"** का प्रयोग किया गया।

5. **सम्बंधित साहित्य का अध्ययन –**

सोशल मीडिया से सम्बंधित अध्ययन –

- **हाशेम (2015)** ने विद्यालयीन विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष दिया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति और सोशल मीडिया के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।
- **ओवुसू (2015)** ने विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया साइट्स के उपयोग का प्रभाव पर अध्ययन किया और शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है तथा सोशल मीडिया के उपयोग एवं शैक्षिक निष्पादन के बीच में प्रबल धनात्मक सहसंबंध होता है। अध्ययन से यह भी पुष्टि हुई कि अधिकाँश प्रत्युत्तरदाता सोशल मीडिया साइट्स का उपयोग शैक्षिक उद्देश्य के बजाय चैट करने के लिए करते हैं।

- **स्कॉलर एवं थोइन** (2015) ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन में सोशल मीडिया पर सलाह देने तथा उपभोग स्वरूप के बीच सहसंबंध का परीक्षण करके महाविद्यालय के विद्यार्थियों की क्रय आदतों पर सोशल मीडिया विशेषकर फेसबुक एवं ट्विटर के प्रभाव का परीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त उपभोग स्वरुप पर सोशल मीडिया उपभोग की आवृत्ति तथा लिंग की भूमिका का परीक्षण भी किया गया। निष्कर्ष से पुष्टि हुई कि फेसबुक तथा ट्विटर विक्रय सूचनाओं तथा संवर्धनों की प्राप्ति हेतु उपयोग किये जाते हैं। इसके साथ दोनों ही सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर लिंग का प्रभाव पाया गया। यह भी पाया गया कि सोशल मीडिया उपयोग की उच्चतर आवृत्ति व्यवसाय में उपभोक्ताओं के क्रय के साथ मित्रवत व्यवहार की संभावना को बढ़ाते हैं।
- **काया एवं बिसेन** (2016) ने विद्यार्थियों के व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव तथा फेसबुक को एक केस स्टडी के रूप में अध्ययन किया और पाया कि सोशल मीडिया व्यवहारसोशल मीडियामें प्रतिभागिता और आत्मविश्वास के बीच धनात्मक सहसंबंध है जो कि मुख्य रूप से फेसबुक उपयोग पर आधारित निष्कर्ष है। विद्यार्थी और उसके अनुचित उपयोग को लेकर सचेत पाए गए विद्यार्थी सोशल मीडिया पर अपनी सामाजिक पहचान की सुरक्षा को लेकर, अपने मित्र की फेसबुक अकाउंट की निजता को लेकर सचेत हैं जो कि एक अच्छा संकेत है।
- **क्रिस्टोफरसन** (2016) ने किशोरों के सामाजिक व संवेगात्मक विकास को सोशल नेटवर्किंग साइट्स किस प्रकार प्रभावित कर रहा है? पर एक व्यवस्थित समीक्षा किया। व्यवस्थित 15 लेखो की समीक्षा के पश्चात प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का किशोरों के सामाजिक व संवेगात्मक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया गया कि किशोरों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग का उनके सामाजिक व संवेगात्मक विकास पर लाभ भी है और जोखिम भी।
- **बर्नार्ड एवं जैन्जा** (2018) ने घाना के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थियों के लिए चाहे वे एक दूसरे से दूर हों या पास, सोशल मीडिया सूचनाओं के आदान प्रदान, संबंधों के निर्माण, समूह चर्चा में सहभागिता के रूप में लाभप्रद होने के बाद भी कुछ सीमित आदतों एवं अवधान में उद्विग्नता जैसे लक्षण पाए गए जो विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन पर गंभीर दुष्परिणाम प्रदर्शित करते हैं।

शैक्षिक चिंता से संबंधित अध्ययन –

- **वितासरी पी. (2010)** ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी चिंता के स्त्रोतों की पहचान हेतु शोध प्रस्तुत किया और पाया कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अध्ययन संबंधी चिंता के कुछ स्तर से पीड़ित रहते हैं। विद्यार्थियों में चिंता के कई स्त्रोत हैं जैसे पस्तुका –लय की चिंता, गणित की चिंता, विद्यालय की चिंता,परीक्षा की चिंता, भाषा की चिंता, प्रस्तुतीकरण की चिंता, एवं सामाजिक ,चिंता। इन स्त्रोतों में शैक्षिक चिंता के पांच प्रभावशाली स्त्रोत हैं – गणित की चिंता, परीक्षा की चिंता, भाषा की चिंता, प्रस्तुतीकरण की चिंता एवं सामाजिकचिंता। यदि विद्यार्थियों में चिंता संबंधी समस्याएँ हैं तो वे अपना श्रेष्ठ निष्पादन नहीं कर पाएंगे।
- **दास** (2014) **हालदार व मिश्रा** ने अपने अध्ययन में पाया कि शैक्षणिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में उच्च शैक्षणिक चिंता विद्यार्थियों की मेहनत और अभिप्रेरणा को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। अध्ययन से यह भी पुष्टि हुई कि शैक्षिक चिंता और शैक्षिक उपलब्धि में नकारात्मक सहसंबंध है।

यद्यपि यह सहसंबंध अत्यधिक न्यून है जो यह दर्शाता है कि नकारात्मक सहसंबंध सांख्यिकीय तौर पर पर्याप्त नहीं है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक चिंता सदैव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव डालती है।

- **खेमका तथा राठौर (2016)** ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किये गए अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि छात्राओं को छात्रों की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता होती है। यह भी पाया गया कि शासकीय विद्यालय के छात्रों को निजी विद्यालय के छात्रों की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता होती है। इसके विपरीत निजी विद्यालय की छात्राओं को शासकीय विद्यालय की छात्राओं की तुलना में अधिक शैक्षिक चिंता होती है।
- **शकीर (2014)** ने शैक्षिक उपलब्धि का शैक्षिक चिंता के साथ सहसंबंध पर अध्ययन किया और निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध होता है। विद्यार्थियों को अध्ययन संबंधी प्रेरणा देने और शिक्षा में उच्च मानकों को प्राप्त करने के लिए मध्यम श्रेणी की शैक्षिक चिंता अत्यावश्यक है। अत्यधिक शैक्षिक चिंता से विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता कम हो जाती है और श्रेष्ठ शैक्षिक निष्पादन में अवरोध उत्पन्न होता है।
- **अजीम, अमन (2018)** ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता तथा शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक चिंता तथा शैक्षिक उपलब्धि में लिंग तथा धर्म के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

6. **परिकल्पना –**

H_1 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_2 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_3 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर विद्यालय प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_4 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_5 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_6 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_7 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

7. **न्यादर्श** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के कुल 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।
8. **उपकरण** – प्रस्तुत अध्ययन से सम्बंधित प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –

i. सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सुभाष सरकार एवं प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित **"इन्टरनेट एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्युड स्केल"** का प्रयोग किया गया है जिसमें 50 कथन हैं। इनमें 25 कथन धनात्मक तथा 25 कथन ऋणात्मक प्रकार के हैं।

ii. शैक्षिक चिंता का मापन करने के लिए डॉ. विशाल सूद एवं डॉ. आरती आनंद द्वारा निर्मित **"एजुकेशनल एंग्जॉयटी इन्वेंटरी"** का प्रयोग किया गया है। जिसमें 42 कथन हैं। इनमें 2 कथन धनात्मक तथा 40 कथन ऋणात्मक प्रकार के हैं।

9. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचना –

प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 2X2X2 त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गयी है –

H_1 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक - 1

किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का प्रभाव

स्त्रोत	वर्गों का योग	df	वर्गों का मध्यमान	F मान
सोशल मीडिया	7.02	1	7.02	0.01
लिंग	158.927	1	158.927	0.227
विद्यालय	3081.365	1	3081.365	4.394 *
सो.मी.Xलिंग	1356.195	1	1356.195	1.934
सो.मी.Xवि.	2246.158	1	2246.158	3.203
लिंगXवि.	1767.142	1	1767.142	2.52
सो.मी.XलिंगXवि.	46.839	1	46.839	0.067
त्रुटि	415129.158	592	701.232	–
योग	9162430	600	–	–
संशोधित योग	424715.273	599	–	–
** = 0.01 स्तर पर सार्थक, * = 0.05 स्तर पर सार्थक				

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि शैक्षिक चिंता के लिए सोशल मीडिया का एफ मान 0.010 (df.592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। अर्थात सोशल मीडिया का शैक्षिक चिंता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को स्वीकार किया जाता है। अतः विश्लेषण द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

H_2 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि लिंग के लिए शैक्षिक चिंता का एफ मान 0.227 (df-592) है यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। अर्थात शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को स्वीकृत किया जाता है।

H_3 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर विद्यालय प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि विद्यालय के लिए शैक्षिक चिंता का एफ मान 4.394 (df-592) पाया गया जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है। गणना के द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शैक्षिक चिंता पर विद्यालय का सार्थक प्रभाव पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर विद्यालय का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को अस्वीकृत किया जाता है।

यह ज्ञात करने के लिए कि विद्यालय प्रकार किस स्तर पर किशोरों की शैक्षिक चिंता को प्रभावित करती है, शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी जिसका सारांश तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित है –

तालिका क्रमांक – 2

विद्यालय प्रकार के आधार पर किशोरों की शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

विद्यालय प्रकार	मध्यमान	मानक विचलन
अशासकीय	123.281	6.035
शासकीय	118.709	6.081

तालिका क्रमांक 2 से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय के किशोरों की शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों का मध्यमान 118.709 एवं मानक विचलन 6.081 है तथा अशासकीय विद्यालय के किशोरों की शैक्षिक चिंता के प्राप्तांकों का मध्यमान 123.281 एवं मानक विचलन 6.035 है। विवेचना द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में अधिक शैक्षिक चिंता पाई गयी।

H_4 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया के लिए शैक्षिक चिंता का एफ मान 1.934 (df-592) पाया गया। जो कि सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया के लिए शैक्षिक चिंता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को स्वीकृत किया जाता है।

H_5 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के लिए शैक्षिक चिंता का एफ मान 3.203 (df-592) पाया गया जो कि सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को स्वीकृत किया जाता है।

H_6 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट है कि लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के लिए शैक्षिक चिंता का एफ मान 2.520 (df.592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को स्वीकृत किया जाता है।

H_7 किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट है कि सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के लिए शैक्षिक चिंता का एफ मान 0.067 (df.592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। इस गणना से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को स्वीकृत किया जाता है।

10. **व्याख्या एवं विवेचना** – अशासकीय विद्यालय के किशोरों में शासकीय विद्यालय के किशोरों की तुलना में शैक्षिक चिंता अधिक पाई गई इसका कारण यह हो सकता है कि अकादमिक सफलता के उच्च स्तर पर सफलता को प्राप्त करने के लिए किशोरों के ऊपर शिक्षा का दबाव बढ़ता जा रहा है उनमें विद्यालय में अच्छे प्रदर्शन तथा भविष्य में रोजगार के बेहतर अवसर को लेकर बढ़ते तनाव के कारण शैक्षिक चिंता का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही है। इस संबंध में यह देखा गया है कि अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के माता-पिता में शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के माता पिता की तुलना में शिक्षा का स्तर अधिक होने के कारण अशासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के माता-पिता द्वारा अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर अत्यधिक जागरूक होने के साथ-साथ बेहतर विद्यालय का विकल्प, अधिक सुख-सुविधाएं, अधिक साधन संपन्नता प्रदान करने के साथ-साथ अपने बच्चों से अधिक अपेक्षाएं होना उनके बच्चों में अधिक शैक्षिक चिंता उत्पन्न करता है।

11. निष्कर्ष –

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
2. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
3. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर विद्यालय प्रकार का सार्थक प्रभाव पाया जाता है।
4. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
5. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
6. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।
7. किशोरों की शैक्षिक चिंता पर सोशल मीडि लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है।

12. संदर्भित ग्रन्थ सूची –

Azeem, A.(2018). Study of Academic Anxiety and Academic Achievement Among Secondary School Students. Journal Homepage: International Journal of Research in Social Sciences 8(3): 2249–2496.

Bernard, Kolan J. & Patience E. D.(2018). Effect of Social Media on Academic Performance of Students in Ghanaian Universities.A Case Study of University of Ghana, Legon. Library Philosophy and Practice 2018.

Christofferson & Jenna P.(2016). How Is Social Networking Sites Effecting Teen's Social and Emotional Development : A Systemic Review.School of Social Work St. Paul, Minnesota In.: https://sophia.stkate.edu/msw_papers/650.

Das, S. K. & Haldar U.K. & Mishra B. (2014). A study on academic anxiety and academic achievement on secondary level school students.Indian streams resrearch journal, 4(6), 1-5.

Hashem, Y. (2015). The impact of social media on the academic achievement of school Students.International journal of bussiness administration, 6(1), 46-52.

Kaya, T. & Bisen H. (2016). The effects of social media on students behaviors; Facebook as a case study.Elsevier journal/ Computers in human behavior 59 374-379.

Khemka, Niti O. & Rathod R. (2016). A study of scademic anxiety of secondary school students. Technolearn 6(1) 31-34.

Owusu, A. M. (2015). Use of Social Media and its Impact on Academic Performance of Tertiary Institution Students. A Study of Students of Koforidua Polytechnic, Ghana 6(6) 94.

Shakir, M. (2014). Academic Anxiety as a Correlate of Academic Achievement.Journal of Education and Practice Vol. 5(10) 29–37.

Vitasari, P. (2010). A Research for Identifying Study Anxiety Sources among University Students, International Education Studies. 3(2) 189.

सिंह, आर. पी. एवं शर्मा ओ.पी. (2015) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, ISBN 978.93.80011.94.3, पृष्ठ 118-119.

शर्मा, आर.ए. (2006) शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृष्ठ-32.